स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्याशाखा के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि
हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

"हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन"

शोधछात्र

लामतुरे वसंत हिरामन

(M.A., B.Ed., SET)

शोधनिर्देशक

डॉ. बी. एस. भुक्तरे

(M.A., Ph.D., NET)
हिंदी विभाग

सहाय्यक प्राध्यापक

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

जि. लातूर- ४१३५१७

अप्रैल - २०१६

“हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन”

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1	**अनुसंधान के बिंदू**	3
2	**भूमिका**	4
3	**अनुसंधान का उद्देश्य**	8
4	**अनुसंधान पद्धतियाँ**	9
5	**अनुसंधान कार्य** प्रथम अध्याय :- तुलनात्मक साहित्य : अर्थ एवं स्वरूप व्दितीय अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं का उद्‌भव, विकास तृतीय अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का कथ्यगत अध्ययन चतुर्थ अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं की तुलना पंचम अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं में शिल्प षष्ठ अध्याय :- मूल्यांकन एवं निष्कर्ष	9
6	**अनुसंधान की उपयोगिता**	12
7	**उपलब्धियाँ**	12
8	**अनुसंधान की व्याप्ती और सीमाएँ**	13
9	**मूल्यांकन एवं निष्कर्ष**	13
10	**परिशिष्ट** **संदर्भ ग्रंथ सूची**	14

“हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन”

प्रथम अध्याय :- तुलनात्मक साहित्य : अर्थ एवं स्वरूप

१.१ तुलनात्मक साहित्य की व्युत्पति   १.२ तुलनात्मक साहित्य का अर्थ

१.३ तुलनात्मक साहित्य का स्वरुप   १.४ तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा

१.५ तुलनात्मक साहित्य के पोषक तत्व   १.६ तुलनात्मक साहित्य का विकास

व्दितीय अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं का उद्‌भव, विकास

२.१ हिंदी दलितआत्मकथाओं का उद्‌भव और विकास

२.२ मराठी दलित आत्मकथाओं का उद्‌भव और विकास

तृतीय अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओंका कथ्यगत अध्ययन

३.१ हिंदी दलित आत्मकथा का कथ्यगत अध्ययन

३.१.१ ओमप्रकाश वाल्मीकि ‘जूठन’,   ३.१.२ कौसल्या बैसंत्री ‘दोहराअभिशाप’

३.१.३ सूरजपाल चौहाण ‘तिरस्कृत’   ३.१.४ माताप्रसाद ‘झोपड़ी से राजभवन तक’

३.१.५ सुशीला टाकभौरे ‘शिकंजे का दर्द’

३.२ मराठी दलित आत्मकथा का कथ्यगत अध्ययन

३.२.१ शरणकुमार लिंबाले ‘अक्करमाशी’ ३.२.२ नरेंद्र जाधव ‘आमचा बाप अन् आम्ही’

३.२.३ सिंधुताई सपकाल ‘मी वनवासी’   ३.२.४ लक्ष्मण गायकवाड ‘उचल्या’

३.२.५ किशोर शांताबाई काळे ‘कोल्हाटयाचं पोर’

चतुर्थ अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं की तुलना

४.१ सामाजिक जीवन की तुलना   ४.२ राजनीतिक जीवन की तुलना

४.३ धार्मिक जीवन की तुलना   ४.४आर्थिक जीवन की तुलना

४.५अस्पृश्यता का चित्रण   ४.६ दलित स्त्री-पुरुष तुलना

४.७ संघर्षमय जीवन कीतुलना   ४.८विद्रोही जीवन की तुलना

४.९ शिक्षा के प्रति आसक्त

पंचम अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं में शिल्प

५.१ शिल्प शब्द की व्युत्पति   ५.२ शिल्प का स्वरुप

५.३ शिल्प का अर्थ   ५.४ शिल्प की परिभाषा

५.५ शिल्प के तत्व   ५.६ हिंदी दलित आत्मकथाओं की भाषा शिल्प

५.७ मराठी दलित आत्मकथाओं की भाषा शिल्प

षष्ठ अध्याय :- मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) मूल ग्रंथ

ब) आधार ग्रंथ

क) पत्र-पत्रिकाएँ

ख) कोश

ग) इंटरनेट

“हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन”

२. भूमिका:(Introduction)

तुलनात्मक शब्द Compare का अनुवाद है। तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत है। जैसे ज्ञान का विकास, शोध प्रविधि, भाषा, व्याकरण के क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन। ज्ञान व्यक्ति जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भाषा है, जो ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम के रुप में सामने आता है। भाषा का ज्ञान प्राप्त करना है, तो तुलनात्मक अध्ययन व्दारा ही संभव है। तुलनात्मक साहित्य एक से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन है। कई विव्दानों के अनुसार साहित्य का अध्ययन करते हुए तुलना करने का अर्थ सिद्ध साहित्य का अध्ययन करना ही है। चाहे एक भाषा में लिखित साहित्य का अध्ययन हो या एक से अधिक भाषाओं में लिखित तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन हो।

आज भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता है; क्योंकि यह अध्ययन विश्व के लिए अधिक उपयुक्त होगा। अपने देश की संस्कृति तथा वैचारिक पक्ष के साथ अन्य देश की संस्कृति तथा वैचारिक पक्ष से तादाम्य स्थापित होगा। अनुवाद प्रविधि व्दारा तुलनात्मक अध्ययन सम्भव होगा। अनुवाद के व्दारा भारतीय भाषा में शेक्सपिअर, शॉ तथा गॉर्की का साहित्य सहज उपलब्ध होगा। तुलना से ही अन्य देशों के साहित्य की पहचान सम्भव है क्योंकि हम रवींद्र, शरद तथा प्रेमचंद के साहित्य को छोडकर अन्य किसी भाषा तथा रचनाकार के साहित्य से अपरिचित ही है। इसलिए एक भाषा से अन्य दुसरी भाषा तक पहुँचने के लिए प्रथम अनुवाद की आवश्यकता है। फिर एक भाषा का दुसरी भाषा से तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सकता है। सामान्य अध्ययन से नही बल्कि इससे नविन संदर्भ तथा नविन रुप में प्रगट होते हैं। तुलनात्मक अध्ययन यह मानवीय क्रियाकलापों को अन्य क्षेत्रों से अवगत कराती है. भाषा और साहित्य का पारस्पारिक सम्बन्ध स्थापित करने की यह एक महत्वपूर्ण पध्दति मानी जाती है। साहित्य में दलित विमर्श की शुरुवात सर्वप्रथम मराठी भाषा में दलित आत्मकथा से मानी गई है।

मराठी साहित्य में सन साठ के बाद से दलित साहित्य का आरंभ हो चुका था। सर्वप्रथम मराठी दलित आत्मकथा 'बलुत' प्रकाशित हुई, जिसके लेखक दया पवार, यही से मराठी दलित आत्मकथा की यात्रा आरंभ होती है, जिसमें लक्ष्मण माने की 'उपरा' १९८०, लक्ष्मण गायकवाड से लिखित 'उचल्या' १९८७ , शरणकुमार लिंबाळे 'अक्करमाशी' १९९७, डॉ.किशोर शांताबाई काले 'कोल्हाट्याचं पोरं' १९९७, प्र.ई. सोनकांबळे आठवणीचे पक्षी १९८७, अशोक पवार से लिखित 'बिराड' २००१, रामचंद्र नलावडे 'दगडफोड्या', बेबी कांबळे 'जिणं अमुचं' बंडु तुपे- काटयावरची पोट (१९८१), नाना साहेब - फांजर (१९८२), नामदेव व्हटकर-कथा माझ्या जन्माची (१९८३) दादासाहेब मोरे - गबाळ, पार्थ पोकले - आभरान(१९८४), श्रीरंग तलवारे - धुपाटी, प्रा.तुवार भाग्यवंत - कोंडाल, शांताबाई काले - माझ्या जन्माची चित्तर कथा, बेबी कांबले - जिणं अमुचं, वैजनाथ कलसे - आयरनीच्या घना, लक्ष्मण गायकवाड - उचल्या, रमाकांत जाधव - रमाकांतच्या आठवणी आदि दलित आत्मकथाओं का समावेश होता है। इन आत्मकथाओं में दलितो की सामाजिक संस्कृति, जनजीवन,धर्म, रूढी, परंपरा, श्रध्दा तथा अंधश्रध्दा, आचार-विचार आदि का दर्शन दलित लेखकोने किया है। दलित आत्मकथाओं का यह नित्यक्रम प्रवाह पाठकों को विचार करने के लिए प्रवृत्त करनेवाला है। इन आत्मकथाओं विविध जाति, धर्म के लोगो ने अपने अनुभव प्रमुखता से व्यक्त किये है। इन आत्मकथाओं के अलावा और भी आत्मकथाओ का निर्माण हुआ है। इनमे रामनगरी (रामनगरकर), मी वनवासी (सिंधुताई सपकाल),कोल्हाटयाचं पोर (किशोर शांताबाई काळे), आमचा बाप अन् आम्ही (नरेंद्र जाधव),हकिकत आणि जटायु (केशव मेश्राम),आत्मकथा : काटेरी तारेच्या कुंपनाची (भीमराव जाधव), वस्ती (वसंत मुन),असे झाल्या दिशा (वासुदेव डहाके),बावळट (गौतम कावळे) आदि मराठी आत्मकथाओं ने दलित आत्मकथा होने की अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इनमें से कुछ आत्मकथाओं का हिंदी मे भी अनुवाद हो गया है। जैसे अछुत (१९८०), यादों के पंछी (१९८३), तराल अंतराल (१९८६), उचल्या प्रथम यह आत्मकथा उठाईगीर (१९९२) इस नाम से प्रकाशित हुई थी। पराया (१९९३), जीवन हमारा (१९९५),अक्करमाशी (१९९७), छोरा कोल्हाटी का (१९९७), डेरा डंगर(२००१), बेरड (२००६) आदि का समावेश है। इन आत्मकथाओं में व्यक्ति

के स्व अनुभव तथा सामाजिक अनुभव भी समाविष्ट है। चातुर्वण्य समाज से आए हुए सामाजिक और प्रातिनिधिक अनुभव से 'स्व' जीवन की झलक इन आत्मकथाओं में मिलती है। बचपन, यौवन, वैवाहिक जीवन, प्रौढावस्था का संघर्ष जीवन यथोचित चित्रण इन आत्मकथाओं में मिलता है। इन आत्मकथाओं ने मराठी साहित्य में तुफान खडे करते हुए उत्कृष्ठ साहित्य के रुप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। जो आज तक अबाध गती से चल रही है।

हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन करते तो यह स्पष्ट होता है कि हिंदी की अपेक्षा मराठी साहित्य में हिंदी से लगभग दस-बारा वर्ष पूर्व ही दलित आत्मकथा का आरंभ हो चुका था। और मराठी दलित आत्मकथाओं से प्रेरित होकर ही हिंदी में प्रथम दलित आत्मकथा प्रकाशित हुई। हिंदी की प्रथम दलित आत्मकथा मोहनदास नैमिशराय की अपने-अपने पिंजरे जो सन १९९५ में प्रकाशित हुई जब की मराठी की प्रथम दलित आत्मकथा दया पवार की 'बलुत' सन १९७८ में प्रकाशित हुई यह सच है कि हिंदी में दलित आत्मकथाओं का लेखन का आरंभ मराठी आत्मकथा की तुलना में देरी से हुआ पर इसके साथ ही यह भी सच है कि नैमिशराय की प्रथम दलित आत्मकथा अपने अपने पिंजरे के बाद लगातार आत्मकथाएँ प्रकाशित होती रही है। हिंदी मे आगे चलकर नब्बे के दशक हिंदी मे भी मराठी दलित आत्मकथा की तरह लगातार आत्मकथा लेखन व्यापक होता गया।

मोहनदास नैमिशराय के आत्मकथा के पश्चात ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' कौसल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', सुरजपाल चौहाण की 'तिरस्कृत', माताप्रसाद की 'झोपडी से राजभवन तक', बी.आर.जाटव 'मेरा सफर मेरी मंजील' सूरजपाल चौहाण की 'संतप्त', सुशीला टाकभौरे 'शिकंजे का दर्द' आदि आत्मकथाएँ एक के बाद एक प्रकाशित होती रही।

यहाँ हमे ज्ञात रखना होगा कि तुलनात्मक दृष्टि से मराठी सह दलित आत्मकथाओं का अविर्भाव अपने आप में एक नवीन परिवर्तन का द्योतक है हिंदी दलित आत्मकथा इसका ज्वलंत प्रमाण है। यह बात और है कि दलित चेतना की शुरुवात और विकास सबसे पहिले मराठी में ही हुआ जिसका मूल कारण है, दलित समाज पर सरे आम की गई सामाजिक,

आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक प्रवंचना। कोई ऐसा क्षेत्र नही जहाँ इस वर्ग की अवहेलना हुई हो। सही कारण है दलित आत्मकथा ने समाज से बहिष्कृत दलितों की यातनाओं और पीड़ाओं को बडी शिद्दत के साथ मुखरित किया है। समाज में रहते हुए भोगे हुए यथार्थ की प्रामाणिक अनुभूति ही साहित्य में प्राणों का संचार करती है, अनुभूती सत्य की अभिव्यक्ति दलित आत्मकथाओं में हुई है जिसका मूल कारण महात्मा फुले और डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का तत्वज्ञान है।

हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं के लेखकों ने जिस जीवन को भोगा उसी को सीधी-साधी भाषा में अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की और जो कुछ भी भोगा उसे अपनी सहज-स्वभाविक आवरण हीन भाषा में व्यक्त किया। हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं का अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि मराठी दलित आत्मकथा समाजाभिमुख है। दलित आत्मकथाओं ने अपने अनुभूतियों से साक्षात्कार कराया। इसलिए मराठी दलित आत्मकथा संपूर्ण मराठी साहित्य में अपना विशिष्ठ स्थान रखती है। हिंदी और मराठी आत्मकथओं में अस्पृश्य होने के कारण भोगी गयी वेदना, अपमान, पीडा और संघर्ष निरुपन ही मुख्य रुप से हुआ है। हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं में समाज मे स्थित जातिवाद, जहाँ-जहाँ मनुष्य का शोषन होता, उसपर अन्याय और अत्याचार किया जाता है, उसका विरोध करता है इस साहित्य की निर्मिती विद्रोह और क्रांति से हुई है इसलिए यह साहित्य दलित समाज जीवन के लिए एक बडी प्रेरणा सिद्ध हुआ है। यह साहित्य दलित समाज में आस्मिता को जगाकर उनमें आत्मगौरव और आत्मसम्मान जगाता है। समाज के भीतर गहरे विश्वास का भाव इसी साहित्य ने निर्माण किया है। इसी कारण मराठी और हिंदी का दलित साहित्य मुक्ति का साहित्य सिध्द हुआ है हिंदी मराठी दलित आत्मकथाओं ने संपूर्ण दलित आंदोलन को न केवल सशक्त बनाया अपितु उसकी व्यापकता की सीमा भी बढ़ाई है। दलित आत्मकथाओ ने शोषण मुक्त और जातिविहीन समाज की संकल्पना को दृढ़ता प्रदान की है। अस्पृश्यता, जातिभेद और छुआ-छुत जैसी समस्याओ पर यह साहित्य कड़ा प्रहार कराता है। इसलिए ये आत्मकथाएँ संपूर्ण समाज को नई दिशाएँ देती है हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं ने सिद्ध किया है कि समानता का नारा लगाने वाले भारतीय समाज में जातिवाद आज भी वर्तमान में है। आज भी भारतीय

समाज में दलित समाज की उपेक्षा और अवहेलना सरे आम की जाती है। अस्पृश्यता का सर्वत्र बोलबाला हैं। जहाँ-जहाँ केवल भाषण बाजी होती है, रंगमंच पर बडी-बडी बाते होती है पर यथार्थ कुछ और होता है। मैंने मराठी भाषा के प्रमुख आत्मकथा शरणकुमार लिंबाले 'अक्करमाशी', नरेंद्र जाधव 'आमचा बाप अन् आम्ही', सिंधुताई सपकाल 'कोल्हाट्याचं पोर', लक्ष्मण गायकवाड 'उचल्या', किशोर शांताबाई काळे 'माझ्या जन्माची चित्तरकथा' यह आत्मकथाएँ चुनी है तथा हिंदी के ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'जूठन', कौसल्या बैसंत्री 'दोहरा अभिशाप', सूरजपाल चौहाण कृत 'तिरस्कृत', माताप्रसाद 'झोपड़ी से राजभवन तक', सुशीला टाकभौरे 'शिकंजे का दर्द' इनका चयन किया है। उपर्युक्त हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

2) अनुसंधान का उद्देश्य: (Research Objectives)

"हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन" इस अनुसंधान कार्य के पिछे मेरे अहम् उद्देश्य है जो इस प्रकार है –

1) दलित समाज को व्यक्तिगत भावभूमि से उपर उठाकर सामाजिकता के स्तर पर पहुँचाना।

2) दलित समाज के विविध तत्व तथा प्रवृत्तियों को परखना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

3) उत्तर आधुनिकता की दौड़ में शहरीकरण के कारण गाँव का प्रत्येक व्यक्ती शहर की ओर स्थलांतर करना चाहता है या फिर कर रहा है। मूलतः स्थलांतर के साथ-साथ अपने शहर के भाग दौड़ की दुनियाँ में स्वयं को भूल गया है। ऐसे व्यक्तियों को दलित समाज के प्रति सजग करना ही मेरे अनुसंधान का उद्देश्य है।

4) दलित रचनाकारों की भाषा मूलतः स्वानुभूत सत्य है। इस भाषा की विशेषताओं तथा शिल्प-विधान को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

3) अनुसंधान पध्दतियाँ: (Methodology of The Study)

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण करना पड़ता है। इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर निम्न अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया जायेगा।

अध्यापन और निष्कर्ष पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार तथा प्रश्नावली पद्धति आदि।

4) अनुसंधान कार्य: (Research Work)

वस्तुतः हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है। शोध विषय को सुचारू रूप से और सुनियोजित रूप से ही अनुसंधान कार्य में सरलता एवं स्तरीयता से संपन्न होता है। अध्ययन की सुविधा और विषय की व्यापकता की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबंध को निम्नांकित छः अध्यायों में विभाजित कर हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन" इस विषय का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत कर यह शोध कार्य पूर्ण किया जायेगा।

5. शोध कार्य शीर्षक: (Research Work of Titel)

प्रथम अध्याय :- तुलनात्मक साहित्य : अर्थ एवं स्वरूप

व्दितीय अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं का उद्‌भव, विकास

तृतीय अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओंका कथ्यगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं की तुलना

पंचम अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं में शिल्प

षष्ठ अध्याय :- मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

प्रथम अध्याय :- तुलनात्मक साहित्य : अर्थ एवं स्वरूप

प्रास्ताविक

१.१ तुलनात्मक साहित्य की व्युत्पति

१.२ तुलनात्मक साहित्य का अर्थ

१.३ तुलनात्मक साहित्य का स्वरुप

१.४ तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा

१.५ तुलनात्मक साहित्य के पोषक तत्व

१.६ तुलनात्मक साहित्य का विकास

उपसंहार

व्दितीय अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं का उद्‌भव, विकास

प्रास्ताविक

२.१ हिंदी दलितआत्मकथाओं का उद्‌भव और विकास

२.२ मराठी दलित आत्मकथाओं का उद्‌भव और विकास

उपसंहार

तृतीय अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओंका कथ्यगत अध्ययन

प्रास्ताविक

३.१ हिंदी दलित आत्मकथा का कथ्यगत अध्ययन

३.१.१ ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन',

३.१.२ कौसल्या बैसंत्री 'दोहरा अभिशाप'

३.१.३ सूरजपाल चौहाण 'तिरस्कृत'

३.१.४ माताप्रसाद 'झोपड़ी से राजभवन तक'

३.१.५ सुशीला टाकभौरे 'शिकंजे का दर्द'

३.२ मराठी दलित आत्मकथा का कथ्यगत अध्ययन

३.२.१ शरणकुमार लिंबाले 'अक्करमाशी'

३.२.२ नरेंद्र जाधव ‘आमचा बाप अन् आम्ही’

३.२.३ सिंधुताई सपकाल ‘मी वनवासी’

३.२.४ लक्ष्मण गायकवाड ‘उचल्या’

३.२.५ किशोर शांताबाई काळे ‘कोल्हाटयाचं पोर’

उपसंहार

चतुर्थ अध्याय :- हिंदी -मराठी दलित आत्मकथाओं की तुलना

४.१ सामाजिक जीवन की तुलना

४.२ राजनीतिक जीवन की तुलना

४.३ धार्मिक जीवन की तुलना

४.४ आर्थिक जीवन की तुलना

४.५ अस्पृश्यता का चित्रण

४.६ दलित स्त्री-पुरुष तुलना

४.७ संघर्षमय जीवन की तुलना

४.८ विद्रोही जीवन की तुलना

४.९ शिक्षा के प्रति आसक्त

पंचम अध्याय :- हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं में शिल्प

५.१ शिल्प शब्द की व्युत्पति

५.२ शिल्प का स्वरुप

५.३ शिल्प का अर्थ

५.४ शिल्प की परिभाषा

५.५ शिल्प के तत्व

५.६ हिंदी दलित आत्मकथाओं की भाषा शिल्प

५.७ मराठी दलित आत्मकथाओं की भाषा शिल्प

षष्ठ अध्याय :- उपसंहार

6. अनुसंधान की उपयोगिताः (Significance of The Research)

“हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन”यह अनुसंधान कार्य के उपरांत ज्ञात होता है कि, दलित समाज जीवन का वह चित्र है जिसमें मनुष्य की सही अथवा गलत छवि का अंकन होता है। आत्मकथाकार का उद्देश्य ही मानव चरित्र तथा उसके मानवतावाद पर प्रकाश डालना है; और दलित समाज जीवन तथा उनके समस्या को सुलझाना है। इसलिए दलित साहितय का योगदान हिंदी साहित्य में दलित विमर्श के लिए महत्वपूर्ण रहा है।

समकालीन दलित आत्मकथाकारों ने भी प्रमुख रूप से दलित समाज की समस्या और उनकी मानसिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने में दलित जीवन की परिवर्तित परिस्थिति में भौतिक सत्यों के प्रामाणिकता दी है, तथा परंपरा का विरोध दिखाया है। धार्मिक संदर्भों की परंपरागत स्थिति के सर्वथा विलग होकर धर्म के प्राचीन प्रतिमानों एवं रूढ़ि सत्यों के प्रति टूटती मान्यताएँ आदि को वर्णित कर परिवर्तित विचारधाराओं की स्वीकृतिकरण की प्रक्रिया में मानवीय दृष्टिकोणों को ही प्रधानता दी है। नये समाज से तादात्म्य स्थापित करने के लिए दलित आत्मकथाकारों ने अपने आत्मकथा नयी दृष्टि पैदा की है।

7. उपलब्धियाँः (Availability of the Thesis)

1. “हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन” इस अनुसंधान कार्य में दलित समाज का जो चित्रण हुआ है, उस चित्रण के माध्यम से दलित समाज की समस्या सभी को अवगत हो जाएगी।
2. वर्तमान घटित घटनाओं के प्रति दलित समाज सचेत दिखाई देगा।।
3. आज दलित समाज में राजनीति के क्षेत्र तथा नेतृत्व का अभाव दिखाई दे रहा। यह चित्र अवगत हो जाएगा।

4. भारतीय राजघटना में देश के सभी धर्म एवं सभी समाज को समान अधिकार दिए है, लेकिन राजनीतिक व्यवस्था के कारण दलित समाज को अपने अधिकारों के लिए झगडना पड रहा है।
5. दलित समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा उनके आचरण पद्धति का विरोध न करते हुए उन्हें भारतीय नागरीक स्वीकार किया जाएगा।

8. अनुसंधान की व्याप्ति और सीमाएँ:(Research It's Scope and Limitation)

"हिंदी-मराठी दलित आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन"यह शोध-प्रबंध हिंदी साहित्य की व्यापक आयाम की अभिव्यक्ति करता है। प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान की रूपरेखा लिखते समय इस विषय के विविध आयाम मेरे सामने आये हैं। प्रस्तुत शोध की अपनी सीमा के कारण उन विविध आयामों का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं होगा। अतः भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य कर सकता है।

1. दलित आत्मकथाओं में मनोवैज्ञानिकता।
2. दलित आत्मकथाओं में व्यक्त लोक संस्कृति : एक अनुशीलन
3. हिंदी के दलित आत्मकथाओं में व्यक्त कार्यक्षेत्रीय जीवन की उपज।
4. हिंदी के दलित आत्मकथाओं में व्यक्त आँचलिक बोध।
5. हिंदी के दलित आत्मकथाओं में व्यक्त नारी विमर्श।

यह मेरी विषयगत मर्यादा है कि मैं इन विषयों के प्रति ध्यान नहीं दे सका आने वाले शोधार्थी इन विषयों में एकाद विषय को चुनकर इन कमियों को पूरा कर सकते हैं।

९. मूल्यांकन एवं निष्कर्ष: (Evaluation Cum-Conclusion)

हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं का अनुशीलन करने से एक और बात स्पष्ट दिखाई देती है जहाँ महात्मा फुले और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के तत्वज्ञान का आधार जहाँ दलित समाज के अज्ञान के अंधकार को चिरकर ज्ञान कि रोशनी जगाता है। वहाँ नये और आधुनिक साहित्यकारों की रचनाएँ भी प्रेरणादायक सिद्ध हो रही है। साथ ही हिंदी की अपेक्षा मराठी दलित साहित्य में आत्मलेखन की और अधिक आकर्षण की ओर झुकता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि, मराठी दलित आत्मकथाकार को प्रसिद्धी अधिक मिली है। इसका कारण यह भी है की मराठी दलित आत्मकथाओं ने जीवन के नितांत नवीन अनुभूतियों से परिचित कराया है। दूसरी ओर महाराष्ट्र में महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे सामाजिक चेतना जगानेवाले नेता हुए जिन्होने दलित समाज को आगे लाने में अपना समस्त जीवन ही

लगा दिया है। ऐसे नेतृत्व का अभाव हिंदी प्रदेशों मे रहा है। निःसंकोच यह कह सकते है हिंदी और मराठी दलित आत्मकथा साहित्य ने संपूर्ण पिछडे वर्ग, मजदूर और किसानों मे एक नई उमंग, आशा और अपेक्षाएँ जगाई है।

1) आत्मकथा विधा भोगे हुए जीवन का यथार्थ का चित्रण करती है।

2) दलित आत्मकथाओं में व्यक्तीगत अनुभव के साथ-साथ समाज समूहों के अनुभवों की अभिव्यक्ति होती है। वह अनुभव उसके, या समूह या जाति के अनुभव होते है।

3) आत्मकथा में लेखक के गुणों के साथ-साथ दोषों का भी चित्रण होता है।

4) हिन्दी की तुलना में मराठी दलित आत्मकथा अत्यधिक प्रभावशाली है। इसका कारण महाराष्ट्र में महात्मा फुले तथा डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर का जीवन कार्य, विचारों से मिलती है।

5) हिन्दी-मराठी दलित आत्मकथाओं में दुःख, वेदना, विद्रोह और नकार को अपना कर शोषण का चित्रण किया है। दोनों भाषाओं में आत्मकथामों में भूख की पीड़ा का समान रूप से चित्रण हुआ है।

6) दोनों भाषाओं के आत्मकथाओं का एकही उद्देश्य है की समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करना तथा समतामूलक समाज का निर्माण करना।

7) हिन्दी आत्मकथाओं की तुलना में मराठी आत्मकथाओं में वास्तव कहने का साहस अधिक हुआ है।

8) मराठी दलित आत्मकथाएँ बोली भाषा में लिखी गई है। इसलिए वह दलित समाज के वास्तविक जीवन से सीधा सम्बन्ध रखती है।

9) दोनों भाषाओं के आत्मकथाओं में नारी के शोषण का चित्रण प्रखरता से दिखाई देता है।

१०. **संदर्भ ग्रंथ सूची**

अ) मूल ग्रंथ

ब) आधार ग्रंथ

क) पत्र-पत्रिकाएँ

ख) कोश

ग) इंटरनेट

शोधकर्ता
लामतुरे वसंत हिरामन
एम.ए.बी.एड.

शोधनिर्देशक
डॉ. बी. एस. भुक्तरे
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर
जि. लातूर- ४१३५१७

Research Guide
Dr B S Bhuktare
Associate Prof Hindi Dept
M U College Udgir